3. जॉन लॉक (1632-1704) ई.

About John locke
- → प्रसिद्ध अंग्रेज विचारक
- → लॉक को उदारवाद का जनक माना जाता है।
- → लॉक की प्रसिद्ध कृतियां – 'लैटर ऑन टॉलरेशन'
  - "Two treaties of government"
  - "An essay concerning human understanding"

Note → उदारवादी विचारधारा, मूलतः व्यक्तिवादी विचारधारा है। जॉन लॉक के विचारों में उदारवाद के निम्नलिखित सिद्धांत पाए जाते हैं

(i) स्वतंत्रता
(ii) सहिष्णुता
(iii) सहमति का शासन
(iv) संवैधानिक शासन

लॉक की सामाजिक समझौते की संकल्पना

- → इस विषय पर उसने अपनी प्रसिद्ध कृति 'Two treaties of govt.' में विचार व्यक्त किये।
- → लॉक के अनुसार 'प्राकृतिक दशा' में मनुष्य विवेकशील ~~प्राणी~~ प्राणी है व स्वभाव से नैतिक नियमों का पालन करता है मनुष्य मूलतः शांतीप्रिय, ~~अनुशासनप्रिय~~ अनुशासनप्रिय और सौजन्यपूर्ण है
- → अतः प्राकृतिक दशा सामान्यतः 'शांति, सद्भावना, परस्पर सहायता और रक्षा' की दशा होती है।
- → परंतु कुछ स्वार्थी लोग नैतिकता के नियमों की अवहेलना करके दूसरों के अधिकारों का हनन करने लगते हैं। जिससे प्राकृतिक दशा की शांति व सुरक्षा भंग हो जाती है इस स्थिति के प्रतिकार के लिए मनुष्य नागरिक समाज (Civil society) की स्थापना करते हैं।
- → नागरिक समाज की स्थापना समुदाय के सारे सदस्य मिलकर एक समझौते के अंतर्गत करते हैं जिसे 'सामाजिक समझौता / अनुबंध' कहते हैं।
- → सरकार की स्थापना एक न्यास या (trust) के रूप में की जाती है।

सरकार को न्याय का अधिकार इस शर्त के साथ सौंपा है कि वह व्यक्ति के मूल अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता व संपत्ति) की रक्षा करेगा।

अर्थात राज्य को केवल दंड देने का अधिकार सौंपा है प्राकृतिक अधिकार व्यक्ति के पास अभी भी सुरक्षित है।

→ इस प्रकार लॉक ने 'सांविधानिक शासन' को बढ़ावा दिया

Note → यदि सरकार अपना दायित्व पूरा न करे तो समाज उसे हटाकर नई सरकार की स्थापना कर सकता है इस तरह लॉक ने 'क्रांति के अधिकार' की मान्यता दी व 1688 की 'गौरवमय क्रांति' को उचित ठहराया।

समझौते का स्वरूप

→ हॉब्स के अनुसार अनुबंध के बाद व्यक्ति प्रभुसत्ताधारी के आदेशों से पूरी तरह बंध जाता है परंतु लॉक के अनुसार अनुबंध के बाद भी व्यक्ति पहले की तरह स्वतंत्र रहता है।

→ अनुबंध की संकल्पना ही एक बुर्जुवा संकल्पना है

→ नागरिक समाज की स्थापना अनुबंध के माध्यम से की जाती है परंतु सरकार की स्थापना 'विश्वास पर आधारित न्यास' के माध्यम से की जाती है।

↓

लॉक के विचार में दो सामाजिक समझौते पाये जाते हैं।

- पहला समझौता → व्यक्ति मिलकर नागरिक समाज का निर्माण करते हैं।
- दूसरा समझौता → नागरिक समाज के द्वारा राज्य या सरकार का निर्माण किया गया।

लॉक ने सरकार को सीमित करने के लिए सरकार को तीन अंगों में

विभाजन किया → विधायिका
→ कार्यपालिका
→ संधि निर्माती शक्ति / संघात्मक

राजनीतिक सत्ता का स्वरूप

→ अपनी प्रसिद्ध कृति 'द ट्रीटिज़ेस ऑफ सिविल गवर्नमेंट' (1690) के अंतर्गत लॉक ने 'नृपति के दैवी अधिकार' का खंडन किया तथा सरकार की सत्ता को एक न्यास या धरोहर के तुल्य बताया।

Note → नृपति का दैवी अधिकार क्या है?
Ans → इसमें राजा की शक्ति ईश्वर की शक्ति की तरह असीम मानी जाती है क्योंकि यह इसे सीधे ईश्वर से प्राप्त हुई है का तर्क दिया जाता है।

लॉक के अनुसार → राजनीतिक सत्ता की उत्पत्ति नागरिक समाज से होती है जो विवेकशील है। तथा अपनी तर्कबुद्धि से प्राकृतिक नियमों का पता लगा सकते है इसके लिए दैवी संदेश का सहारा लेने की जरूरत नहीं है।

लॉक ने राज्य या शासन के पैतृकवादी आधार का खंडन किया जिसके अंतर्गत व्यक्ति को अपना हित समझने और उसकी सिद्धि करने में असमर्थ माना जाता था। तथा जिसके आधार पर पूर्णसत्तावादी या 'सर्वाधिकारवादी' शासन को उचित ठहराया जाता था।

लॉक के अनुसार → मनुष्यों को सामाजिक जीवन में बांधने के लिए यह जरूरी नहीं कि कोई प्रभुसत्ताधारी उन पर अपने नियम लागू करे। व्यक्ति पर राज्य का नियंत्रण व्यक्तियों की सहमति के बाद ही संभव है।

उदाहरण → पिता बच्चे को निर्देश देता है नियंत्रण रखता है क्योंकि बच्चा अल्पवयस्क है राजा प्रजा को निर्देश नहीं दे सकता है क्योंकि प्रजा बच्चे नहीं है।

राज्य के कार्य

- विधि व्यवस्था बनाए रखना।
- बाह्य शत्रुओं के आक्रमण से राज्य की रक्षा करना।
- समझौते की संवैधानिकता को बनाए रखना

संपत्ति के अधिकार पर विचार

(1) नीजी संपत्ति का स्वरूप

लॉक ने 'संपत्ति के अधिकार' को मनुष्य के मूल प्राकृतिक अधिकार के रूप में मान्यता दी है।

→ मैकफर्सन – के अनुसार 'जॉन लॉक' द्वारा राज्य व सरकार के निर्माण का मूल उद्देश्य संपत्ति के सिद्धांत को औचित्य प्रदान करना है।

→ मैकफर्सन → ने लॉक के विरोधाभास की व्याख्या करते हुए कहा कि यदि मनुष्य स्वभाव से विवेकशील है तो उन्हें राज्य की आवश्यकता क्यों? क्योंकि वे स्वार्थी है (कुछ लोग), यानि ये कुछ लोग विवेकशून्य है ये लोग कौन है।

उनके अनुसार → लॉक का तर्क है कि वास्तव में 'बुर्जुवा' या मध्यमवर्गीय (संपत्तिवान) मनुष्य ही विवेकशील होता है परंतु निर्धन या संपत्तिहीन वर्ग विवेक शून्य होता है।

लॉक के अनुसार संपत्ति क्या है?

Ans → संपत्ति का आशय भूमि व वस्तुओं से है व्यक्ति, प्राकृतिक वस्तुओं में अपना श्रम मिलाकर उनका स्वामी बन जाता है। व्यक्ति का मूल उद्देश्य श्रम द्वारा अर्जित संपत्ति की रक्षा करना है।

Note → लॉक ने संपत्ति पर प्रतिबंध भी लगाया है उसने कहा संपत्ति को दूसरों के लिए भी छोड़ना चाहिए तथा उसे नष्ट नहीं करना चाहिए

निजि संपति का औचित्य

→ लॉक के तर्कों से वह पूंजीवाद का सच्चा समर्थक सिद्ध होता है।

→ लॉक ने तर्क दिया है कि कोई भी मनुष्य अपने उपयोग के लिए इन संसाधनों में से किसी का उपयोग तभी कर सकता है जब वह उसके साथ अपना श्रम मिलाकर उस पर अपना अधिकार सिद्ध कर सके। इस तरह उसे वस्तु को अपने अधिकार में लेने के लिए दूसरों की सहमति आवश्यक नहीं होती।

→ मैकफर्सन ने इस तर्क को 'स्वत्वमूलक व्यक्तिवाद' की संज्ञा दी है। जिसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति वस्तुतः अपने शरीर और अपनी क्षमताओं का स्वामी है। ~~अतः~~ इनके लिए वह समाज के प्रति किसी भी तरह से ऋणी नहीं है।

→ लॉक के अनुसार → यदि कोई व्यक्ति उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से बहुत सारी भूमि अपने अधिकार में ले लेता है तो उससे यह नहीं पूछा जाना चाहिए कि दूसरों के लिए पर्याप्त भूमि बच गई है या नहीं ?

→ वह न केवल उत्पादन के उद्देश्य से असीम संपति के संचय को उचित ठहराता है बल्कि राज्य को निजी संपति की सुरक्षा का साधन बनाकर बाजार की आर्थिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करने से रोकता है।

जॉन लॉक के तर्क पूंजीवादी समर्थक है।

~~नि~~ जॉन लॉक के क्रांति पर विचार

लॉक के विचारों के परिणामस्वरूप इंग्लैंड में गौरवमयी क्रांति हुई। उसके विचारों ने फ्रांसीसी क्रांति को भी प्रभावित किया। अमेरिका के संविधान में लॉक के विचारों का अत्यधिक प्रभाव है।

जॉन लॉक ने क्रांति के स्थान पर 'स्वर्ग से प्रार्थना' शब्द का प्रयोग किया है।

→

लॉक के विचारों में सीमित और संवैधानिक शासन का आधार पाया जाता है। राज्य ने संभावित निरंकुश व्यक्ति पर प्रतिबंध लगाने के लिए निम्न आधारों पर क्रांति को औचित्यपूर्ण ठहराया—

(i) यदि राजा या एक व्यक्ति विधि के स्थान पर निरंकुश शासन करने लगे।

(ii) जब राजा विधायिका के स्वतंत्र कार्यकरण में बाधा उत्पन्न करे।

(iii) जब राजा निरंकुश रूप में चुनाव या चुनाव के तरीके में परिवर्तन करने लगे।

(iv) जब राजा या विधायिका नागरिकों को किसी विदेशी शक्ति के हवाले सौंपने लगे।

(v) यदि सर्वोच्च कार्यकारी अधिकारी विधि की अवहेलना या उसका पालन न करे।

Note जॉन लॉक के अनुसार 'क्रांति के परिणामस्वरूप सरकार को हटाया जाता है, राज्य विद्यमान रहता है।
जबकि हॉब्स के अनुसार क्रांति के बाद प्राकृतिक अवस्था पुनः आ जाएगी क्योंकि राज्य, समाज व सरकार सभी का निर्माण एक ही समझौते से हुआ था।

निष्कर्ष

लॉक की दार्शनिक और राजनीतिक मान्यताएं ठेठ उदारवादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है।
लॉक ने सौदागर-उद्योगपति वर्ग के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एक विशिष्ट तर्क प्रणाली प्रस्तुत की है और यह मांग की है कि राजनीतिक शक्ति उसी वर्ग के हाथों में रहनी चाहिए।

Note 19वीं शताब्दी तक आते-2 पूंजीपति वर्ग सत्तारूढ़ हो गया तब उदारवाद ने अपने नकारात्मक दृष्टिकोण का त्याग कर दिया और

जे. एस. मिल तथा T. H ग्रीन जैसे विचारकों ने राज्य के कल्याणकारी रूप का समर्थन करके उदारवाद के सकारात्मक पक्ष को बढ़ावा दिया।

अतः लॉक का 17वीं शताब्दी में ध्येय सामंतवाद पर जबल प्रहार करना, पूंजीपति वर्ग को राजनीतिक शक्ति प्रदान करना व पूंजीवाद को बढ़ावा देना था।

यह सच है कि लॉक ने अपना चिंतन इतिहास के जिस दौर में प्रस्तु किया, उस समय वह उभरते हुए पूंजीवाद को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक था परंतु आज के युग में उसकी सारी मान्यताओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। लॉक ने संपति के अधिकार को इतना पावन व शक्तिशाली बना दिया कि जिसके बाद के युग में धनवान और निर्धन वर्गों की लड़ाई सारी राजनीति का केंद्र ब गई।

<u>Note</u> → लॉक के अनुसार मनुष्य के पास 3 मूल प्राकृतिक अधिकार जो उसे जन्म से ही मिल जाते है।

→ जीवन जीने का अधिकार
→ स्वतंत्रता का अधिकार
→ संपति का अधिकार